पुस्तक समीक्षा

सामाजिक विमर्श
3(2) 291–295, 2020
© The Author(s) 2021
Reprints and permissions:
in.sagepub.com/journals-permissions-india
DOI: 10.1177/2581654320985655
http://smv.sagepub.in

RNP Singh, *Durand Line: Did India Fail Frontier Gandhi?,* New Delhi: Vitasta Publishing Pvt. Ltd. and Vivekanand International Foundation, 2020, 311 pp., ₹695

आर.एन.पी. सिंह की उपरोक्त पुस्तक विवेकानंद इंटरनेशनल फाउंडेशन की एक महत्त्वपूर्ण पहल है, जिसके माध्यम से आज के संदर्भ में खान अब्दुल गफ्फार, जिन्हें श्रद्धा से 'सीमांत गांधी' एवं सम्मान से 'बादशाह खान' के नाम से जाना जाता है, उनके विचारों एवं सिद्धांतों का पुनर्वलोकन एवं स्मरण करने का एक सराहनीय प्रयास है। विवेकानंद इंटरनेशल फाउंडेशन की ओर से यह पहल आधुनिक भारत के निर्माताओं का पुनर्मूल्यांकन करने के उद्देश्य से की गई है, जिसमें उनके विचारों एवं सिद्धांतों का एक नये दृष्टिकोण से अवलोकन करने का एक प्रयास है। इसी पहल के तहत, आर.एन.पी. सिंह ने, नेहरू, पटेल एवं गफ्फार खान पर अलग-अलग पुस्तकें लिख कर उनके विचारों एवं योगदानों की नये ढ़ंग से व्याख्या की है। जहाँ नेहरू को उन्होंने 'Troubled Legacy' के रूप में, भारत विभाजन, कश्मीर, चीन के हाथों 1962 के जंग की पराजय एवं दुर्बल सैन्य शक्ति के निर्माण के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार ठहराया है, वहीं पटेल को 'Unifier of Modern India' के रूप में उनके राष्ट्रीय एकीकरण के योगदानों को सराहा है। नेहरू एवं पटेल के लिए उन्होंने स्पष्ट शब्दावली का प्रयोग कर अपना उद्देश्य लक्षित किया है। परंतु, गफ्फार खान के लिए स्पष्ट रेखा खींचने में झिझक दिखाई है। अब्दुल गफ्फार खान के विचार, सिद्धांत एवं उद्देश्य इतने निष्पाप एवं निष्कलंक है कि न तो वे किसी विश्लेषण के मुहताज है, और न ही उन्हें लक्षित किया जा सकता है।

ऐसे तो सीमांत गांधी पर कई पुस्तकें लिखी गई हैं, लेकिन, इस पुस्तक में जो प्रश्न उठाया गया है, वह है- 'क्या भारत ने सीमांत गांधी को विफल किया?' यह प्रश्न सटीक है, और इसकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। इस पुस्तक के दो महत्त्वपूर्ण संदेश हैं। एक तो यह है कि भारतीय उपमहाद्वीप ने सीमांत गांधी के विचारों एवं सिद्धांतों को खारिज कर विभाजनकारी शक्तियों को मजबूत किया है, जिसका तात्कालिक दुष्परिणाम भारत विभाजन एवं साम्प्रदायिक हिंसा का वीभत्स रूप इतिहास में दर्ज हो गया है, और जिसका दूरगामी परिणाम आज भी अंतर-समुदायिक तनावों के रूप में पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में देखने को मिलता है। दूसरा यह है कि विभाजन के बाद जिस प्रकार की भौगोलिक-राजनैतिक (geo-political) परिस्थिति का निर्माण भारतीय उपमहाद्वीप में हुआ है, वह सीमांत गांधी के विचारों एवं नीतियों को ठुकराने का भी एक दुष्परिणाम है। ब्रिटिश उपनिवेश की समाप्ति के बाद, दक्षिण एशिया का भौगोलिक, राजनैतिक एवं सामरिक परिदृश्य अस्थिर रहा है, और अस्थिरता बनी